REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

राष्ट्रपितामह – महर्षि दयानन्द सरस्वती और राष्ट्रपिता – महात्मा गांधी

डॉ. अनुपमा आर्या
ऐसोसिएट प्रोफेसर , राजनीति शास्त्र , आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला छावनी.

प्रस्तावना :

19वीं शताब्दी में भारत के दो महान सपूतों ने इस पावन भूमि पर जन्म लिया। मूलशंकर और मोहन दास कर्मचन्द गांधी। दोनों का जन्म पश्चिमी भारत के काठियावाड़ क्षेत्र में हुआ। मूलशंकर 1829 ई0 में टंकारा (मौरवी प्रान्त) में और गांधी राजकोट (जो टंकारा के निकट ही है) ने 1869 ई0 में। मूलशंकर जो आगे चलकर दयानन्द कहलाए। दोनों दयानन्द और गांधी संसार के महान् व्यक्तियों में से हैं। दयानन्द ने हल आदि चलाकर स्वराज्य की भूमि तैयार की, उसमें आजादी का बीज डाला तो महात्मा गांधी ने उस फसल की रक्षा की। दोनों आत्माओं की तुलना का अर्थ यह कदापि नहीं कि किसी को छोटा या बड़ा ठहराना हैं। उद्देश्य तो सिर्फ इतिहास की एक छवि दिखाना है।

कांग्रेस के अध्यक्ष पट्टामिसीतारमैया कहा करते थे – "अगर महात्मागांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह है।" भारत को आज़ाद करवाने में दोनों की अपनी अपनी भूमिका रही। युगपुरूषों का यह मिलान तो उतना कठिन नहीं जितना कि इतिहास में उनके वास्तविक स्थान का निर्णय।

स्वामी दयानन्द ने अपने विचारों का आधार वेदों को माना क्योंकि वेद न केवल राष्ट्रीय जागरण के ही अपितु मनुष्यमात्र के कल्याण तथा सुख–समृद्धि के स्त्रोत हैं। महात्मा गांधी के विचार स्वामी दयानन्द के विचारों पर ही आधारित प्रतीत होते हैं। राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना – दयानन्द का पहला और अन्तिम उद्देश्य था। इसके लिए वह सामाजिक सुधार पहले चाहते थे। वह जानते थे कि जब तक भारतीयों की सामाजिक गुलामी समाप्त नहीं होती, राजनैतिक गुलामी को समाप्त नहीं किया जा सकता। समाज सुधार के दृष्टिकोण से महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी एक दूसरे के बहुत समीप है। सम्पूर्ण आयु या उसके प्रथम भाग को ब्रह्मचर्य आश्रम के रूप में व्यतीत करने की आवश्यकता दोनों समान रूप से अनुभव करते हैं। अछूतोद्वार के विषय में दोनों का एक सा मत है। परन्तु इन्हीं विषयों पर दोनों के शास्त्रीय विचारों में अन्तर हैं। महर्षि ने गुण, कर्म और स्वभाव से वर्ण व्यवस्था मानते हुए जन्म से मानने की परिपाटी को बिल्कुल ही समाप्त करना चाहा और इसी रूप में अछूतोद्वार का प्रश्न हल किये। परन्तु गांधी ने जन्म की परिपाटी का उल्लंघन न करते हुए केवल व्यवहार में से छुआछूत के अन्याय को उठा देने का प्रयत्न किया।

राजनैतिक स्वतन्त्रता में सर्वप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण और आवाहन सबसे पहले दयानन्द ने किया और उस समय तो शायद गांधी जी अभी पैदा भी नहीं हुए होंगे।हमारा स्वतन्त्रता संग्राम कुछ गुरू मन्त्रों पर लड़ा गया – स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा। वास्तव में इन्हें देने वाले इन की शुरूआत करने वाले दयानन्द थे। दयानन्द ऐसे पहले भारतीय थे जिन्होंने भारत की अर्थ–व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए और बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने के लिए स्वदेशी का नारा लगाया और विदेशों में बनी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया। गांधी जी के अनुयायियों और आर्य समाज के सदस्यों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग आरम्भ कर दिया। उन्हों अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में सिंह गर्जना करते हुए लिखा – 'इतने से ही समझ लो कि अंग्रेज अपने देश के जूते का भी जितना मान करते हैं उतना वह अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।' यह बात लिखने वाले के मन में कितनी पीड़ा रही होगी अपने देश की दीन–हीन दशा देखकर और कितनी तीव्र घृणा होगी उसके हृदय में विदेशी शासन और विदेशी वस्तुओं के प्रयोग के प्रति।

भारत की वर्तमान अवस्था तेजी से बढ़ती हुई द्ररिद्रता की हैं। देश की इस अवस्था में, अपने धन्धों और उद्योगों की पुनः बहाली का प्रश्न जितना महत्वपूर्ण है उतना अन्य कोई सामाजिक प्रश्न नहीं है।

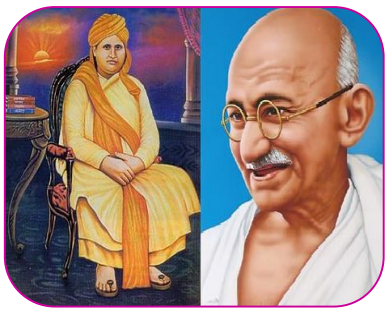

जहाँ गांधी देश को केवल विदेशी दासता से मुक्त कराने में ही प्रयत्नशील रहे, स्वामी दयानन्द देशवासियों को अन्धविश्वास और जाति–भेद आदि कुरीतियों से मुक्त करवाने का यत्न करते रहे। दयानन्द भारतीयों में आत्मिक जागृति द्वारा उन्हें शारीरिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्ति प्रदान कर राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए वैदिक ज्ञान दें, प्राचीन गौरव का गान कर उनमें आत्मविश्वास पैदा करना चाहते थे। सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास में वो लिखते हैं –"यह आर्यावर्त ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोग में दूसरा देश नहीं है ..... पारसमणि पत्थर सुना

जाता है। यह बात तो झूठी है परन्तु यह आर्यावर्त देश ही ऐसा है जिसको लोहेरूपी विदेशी छूते ही स्वर्ण, अर्थात् धनाड्य हो जाते हैं।"

दयानन्द और गांधी दोनों संकुचित राष्ट्रवाद से बहुत ऊपर उठे हुए थे। दोनों ही जगत् के कल्याण और मनुष्यमात्र की भलाई में रत थे। दोनों ही राजनीतिज्ञ की अपेक्षा धर्माचार्य अधिक दीख पड़ते हैं। गांधी ने जिस नमक सत्याग्रह की बात की, आन्दोलन किया – दयानन्द उस पर पहले ही नौन–पौन का सिद्धान्त दे चुके थे। वो सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि नौन–पौन पर जो कर लिया जाता है वो मुझे अच्छा मालूम नहीं पड़ता। 1875 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द ने नमक कर और जंगल कानून का विरोध किया। न्यायालयों में स्टाम्प शुल्क आदि की भी आलोचना प्रथम संस्करण में देखने को मिलती है। इतिहासकार कहते हैं कि नमक सत्याग्रह की धारणा गांधी जी ने दयानन्द के विचारों से ही ली होगी।

गांधी और दयानन्द गुजारती होने के बावजूद हिन्दी का अपने भाषणों और ग्रन्थों में प्रयोग किया। भारत की प्रादेशिक भाषाओं की एक लिपि होने की कल्पना भी सर्वप्रथम दयानन्द के दूरदर्शी मस्तिष्क में उत्पन्न हुई थी। महर्षि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में लिखा "जब पांच–पांच वर्ष के बालक–बालिका हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करायें।

इसमें केवल सन्देह नहीं कि राजनैतिक जागरण, जनता का देश की राजनीति में क्रियात्मक भाग लेने का श्रेय गांधी को जाताहै। उनसे पूर्व राजनीतिक विचारधारा केवल कुछ बौद्धिक तथा शिक्षित लोगों तक ही सीमित थी। गांधी ने प्रत्येक देशवासी तक देशभक्ति की ज्वाला की गर्मी पहुँचाई और स्वतन्त्रता के आन्दोलन को जनता का आन्दोलन बनाया। परन्तु यह बात सर्वविदित है कि उत्तर भारत के लोगों में देश भक्ति की लहर दयानन्द और आर्य समाज ने चलाई। यदि स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज, एक जागृत समाज का निर्माण न करते, तो भारत के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक भूतकाल पर गर्व करने वाले समाज का निर्माण न होता।

वास्तविकता तो यह है कि स्वाधीनता के जिस यज्ञ की पूर्णाहूति 15 अगस्त 1947 को हुई उसका शुभारम्भ दयानन्द के हाथों हुआ और वह कुण्ड जिसमें अग्नयधान हुआ था वह निश्चय ही आर्यसमाज था।

REFERENCES

1. O.p. Goyal, 'Studies in Modern Indian Political Thought – The Moderates and the Extremists" Kitab mahal, Allahabad, 1977.
2. V.P. Verma, "Modern Indian Political Thought" Educational Publishers, Agra, 1971.
3. V. r. Mehta, "Foundations of Indian Political Thought (from Manu to the Present Day), Manohar Publications, New Delhi-1992.
4. K. P. Karunakaran, "Religion and Political Awakening in India", Meenakshi Parkashan, Meerut, 1969.
5. Hiren Mukherjee, "Recalling India's Struggle for Freedom, Seema Publications, Delhi, 1983.